मनुष्यता

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर

2016
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 1.

'मनुष्यता' कविता में कवि ने किन पहान व्यक्तियों का उदाहरण दिया है और उनके माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है?

Answer:

कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'मनुष्यता' कविता में महर्षि दधीचि, राजा रंतिदेव, गंधार के राजा उशीनर (शिवि) तथा कर्ण आदि के उदाहरण द्वारा जीवन में परोपकार का महत्त्व दर्शाया है। ऋषि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए और वृत्रासुर के वध के लिए अपनी अस्थियाँ दान में दे दी थीं। राजा रंतिदेव ने स्वयं भूख से व्याकुल होते हुए भी अपने हाथ में पकड़ा हुआ भोजन का थाल एक भूखे व्यक्ति को दे दिया था। गंधार के राजा उशीनर ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस तक दान कर दिया था। कर्ण ने ब्राह्मण वेश में आए देवराज इंद्र को अपने शरीर का रक्षा कवच (चर्म) तक दान में दे दिया था। इन उदाहरणों के माध्यम से कवि मनुष्यता को त्याग, बलिदान, मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करें। वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहे। निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना यही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है, कवि जन-जन में इस भाव को जगाने का संदेश देना चाहता है।

2015
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने किन गुणों को अपनाने का संकेत दिया है? तर्क-सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने मानव मात्र को त्याग, प्रेम, बलिदान, परोपकार, सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों को अपनाने का संदेश दिया है। मानव जीवन एक विशिष्ट जीवन है। अतः अपने से पहले दूसरों की चिंता करते हुए अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और अपनी वैचारिक शक्ति का सदुपयोग करना मानव का कर्तव्य है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहे। वह पौराणिक कथाओं के माध्यम से विभिन्न महापुरुषों जैसे दधीचि, कर्ण, रंतिदेव के अतुलनीय त्याग से प्रेरणा ले। ऐसे सत्कर्म करे जिससे मृत्यु उपरांत भी लोग उसे याद करें। उसका यश मानव मात्र के हृदय में जीवित रहे। निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना व स्वयं ऊँचा उठने के साथ-साथ दूसरों को भी ऊँचा उठाना ही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.

मैथिलीशरण गुप्त ने गर्वरहित जीवन बिताने के लिए क्या तर्क दिए हैं?

Answer:

कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार समृद्धशाली होने पर भी मनुष्य को गर्व-रहित जीवन जीना चाहिए। न तो मनुष्य को अपने पैसों पर घमंड करना चाहिए और न ही सनाथ होने पर क्योंकि यहाँ कोई भी अनाथ नहीं है। वह ईश्वर ही सबका परमपिता है। उसके रहते भला कोई अनाथ कैसे हो सकता है। ईश्वर संपूर्ण सृष्टि के नाथ हैं, संरक्षक हैं। उनकी शक्ति अपरंपार है। वे अपने अपार साधनों से सबकी रक्षा और पालन करने में समर्थ हैं। वह प्राणी अत्यंत भाग्यहीन है जो उस परमपिता के रहते हुए भी स्वयं को अधीर, अशांत और अतृप्त अनुभव करता है।

Question 4.

मैथिलीशरण गुप्त ने उदार व्यक्ति के क्या-क्या लक्षण बताए हैं? स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:
'मनुष्यता' कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने उदार व्यक्ति के लक्षण बताते हुए कहा है कि उदार व्यक्ति का प्रत्येक कार्य परोपकार के उद्देश्य से होता है। वह संपूर्ण विश्व में अपनत्व का भाव जगाता है। वह अपने आपको विश्व का एक अभिन्न अंग बना देता है। उदार व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है। स्वयं धरती भी उसके प्रति कृतार्थ भाव मानती है। वास्तव में जो व्यक्ति दूसरों के लिए अपना तन-मन-धन अर्थात सर्वस्व समर्पित कर देता है वही उदार या सहृदय कहलाता है।

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

'मनुष्यता' कविता के आधार पर किन्हीं तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए।

Answer:
'मनुष्यता' कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त जी मानवीय गुणों के विषय में बताते हुए कहते हैं कि इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्य एक समान हैं। हमें एक-दूसरे मनुष्य की मदद करनी चाहिए। सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीता है, मरता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु सुमृत्यु कहलाती है। मनुष्यता कभी किसी से भेदभाव करना नहीं सिखाती। मनुष्यता हमें परोपकार करने और स्वयं पर घमंड न करने को प्रेरित करती है। परोपकार के इसी महत्त्व को स्थापित करने के लिए कवि ने ऋषि दधीचि, शिवि, रंतिदेव और कर्ण के उदाहरण दिए हैं। कवि के अनुसार हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि शरीर मरणशील है और आत्मा अमर है। अतः मरने से घबराने की आवश्यकता नहीं है। आत्मा की अमरता में विश्वास रखना चाहिए।

Question 6.

'मनुष्यता' कविता में कवि ने किन महान व्यक्तियों के उदाहरणों से मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिए हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'मनुष्यता' कविता में महर्षि दधीचि, राजा रंतिदेव, गंधार के राजा उशीनर (शिवि) तथा कर्ण आदि के उदाहरण द्वारा जीवन में परोपकार का महत्त्व दर्शाया है। ऋषि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए और वृत्रासुर के वध के लिए अपनी अस्थियाँ दान में दे दी थीं। राजा रंतिदेव ने स्वयं भूख से व्याकुल होते हुए भी अपने हाथ में पकड़ा हुआ भोजन का थाल एक भूखे व्यक्ति को दे दिया था। गंधार के राजा उशीनर ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस तक दान कर दिया था। कर्ण ने ब्राह्मण वेश में आए देवराज इंद्र को अपने शरीर का रक्षा कवच (चर्म) तक दान में दे दिया था। इन उदाहरणों के माध्यम से कवि मनुष्यता को त्याग, बलिदान, मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करें। वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहे। निःस्वार्थ भाव से जीवन जीना, दूसरों के काम आना यही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है, कवि जन-जन में इस भाव को जगाने का संदेश देना चाहता है।

Question 7.

'मनुष्यता' कविता में कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है? इसके क्या लाभ हैं? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'मनुष्यता' कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा दी है क्योंकि इससे आपसी मेल-भाव बढ़ता है तथा हमारे सभी काम सफल हो जाते हैं। यदि हम सभी एक होकर चलेंगे तो जीवन मार्ग में आने वाली हर विघ्न-बाधाओं पर विजय पा लेंगे। जब सबके द्वारा एक साथ प्रयास किया जाता है तो वह सार्थक सिद्ध होता है। सबके हित में ही हर एक का हित निहित होता है। आपस में एक दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ने से प्रेम व सहानुभूति के संबंध बनते हैं तथा परस्पर शत्रुता एवं भिन्नता दूर होती है। इससे मनुष्यता को बल मिलता है। कवि के अनुसार यदि हम एक दूसरे का साथ देंगे तो हम प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 8.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(i) **अभीष्ट मार्ग से क्या तात्पर्य है?**

(क) अपनी इच्छा का मार्ग।
(ख) रुचि, योग्यता के अनुसार मार्ग।
(ग) पूर्वजों द्वारा अपनाया मार्ग।
(घ) दूसरों द्वारा बताया मार्ग।

(ii) **विघ्न-बाधा आने पर क्या करना चाहिए?**

(क) ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।
(ख) बाधा को दूर करना चाहिए।
(ग) डटकर मुकाबला करना चाहिए।
(घ) सहर्ष खेलना चाहिए।

(iii) **कवि के अनुसार सच्चा मानव कौन है?**

(क) जो दूसरों पर प्राण न्योछावर करे।
(ख) जो अभीष्ट मार्ग में बढ़ता रहे।
(ग) जो विपत्ति-बाधाओं की चिंता न करे।
(घ) जो औरों को तारता हुआ स्वयं तरे।

(iv) **समर्थ भाव क्या है?**

(क) दूसरों को मारकर स्वयं जीवित रहना।
(ख) दूसरों की निंदा कर स्वयं की प्रशंसा करना।
(ग) दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता पाना।
(घ) दूसरों को पछाड़कर स्वयं आगे बढ़ना।

(v) **कवि परस्पर मेलजोल बढ़ाने का परामर्श क्यों देता है?**

(क) प्रेम से रहने के लिए
(ख) भेदभाव न बढ़ने देने के लिए।
(ग) एक ही मार्ग से आगे बढ़ने के लिए।
(घ) समर्थ भाव बढ़ाने के लिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(*i*) (क) अपनी इच्छा का मार्ग।

(*ii*) (ग) डटकर मुकाबला करना चाहिए।

(*iii*) (क) जो दूसरों पर प्राण न्योछावर करे।

(*iv*) (ग) दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता पाना।

(*v*) (ख) भेदभाव न बढ़ने देने के लिए।

2013
काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 9.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(*i*) **'मर्त्य' किसे कहते हैं?**

(क) यमराज (ख) असुर

(ग) मरणशील (घ) सुर

(*ii*) **मृत्यु की सार्थकता है–**

(क) देशहित में (ख) कीर्ति के प्रसार में

(ग) बलिवेदी पर चढ़ने में (घ) सबके याद करने में

(*iii*) **कवि ने किसे पशु के समान नहीं माना है?**

(क) जो केवल अपनी भलाई सोचता है। (ख) जो दूसरों की निंदा करता है।

(ग) जो दूसरों से ईर्ष्या करता है। (घ) जो दूसरों के काम आता है।

(*iv*) **'आप आप ही चरे' का आशय है–**

(क) स्वार्थ-सिद्धि (ख) परार्थ सिद्धि

(ग) संकुचित विचार रखना (घ) उदार होना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(v) प्रस्तुत काव्यांश से क्या संदेश मिलता है?

(क) हमेशा अपने स्वार्थ में लगा रहना चाहिए
(ख) मानव मात्र की भलाई करनी चाहिए
(ग) दूसरों की ख़ातिर मर जाना चाहिए
(घ) जानवर की तरह जीना चाहिए

Answer:

(i) (ग) मरणशील
(ii) (घ) सबके याद करने में
(iii) (घ) जो दूसरों के काम आता है।
(iv) (क) स्वार्थ-सिद्धि
(v) (ख) मानव मात्र की भलाई करनी चाहिए

Question 10.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

(i) अनंत अंतरिक्ष में कौन खड़ा है?

(क) सूर्य-चंद्र
(ख) इंद्र
(ग) परमेश्वर
(घ) देवसमूह

(ii) अंतरिक्ष में खड़े देव अपनी बाहु क्यों बढ़ा रहे हैं?

(क) मदद के लिए
(ख) स्वस्थता के लिए
(ग) समृद्धि के लिए
(घ) मार्गदर्शन के लिए

(iii) 'परस्परावलंब' का आशय है–

(क) एक-दूसरे का सहयोग लेना
(ख) एक-दूसरे से शत्रुता करना
(ग) एक-दूसरे से छल-कपट करना
(घ) दूसरे से स्वार्थ सिद्ध कराना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*iv*) **कवि मनुष्य को किस प्रकार रहने की सलाह देता है?**

(क) असहयोग की भावना से
(ख) सहयोग की भावना से
(ग) हिंसा की भावना से
(घ) पराधीनता की भावना से

(*v*) **कविता का संदेश है–**

(क) जीवन की सार्थकता स्वार्थ सिद्धि में
(ख) जीवन की सार्थकता कुटिल व्यवहार में
(ग) जीवन की सार्थकता परोपकार में
(घ) जीवन की सार्थकता देवों के व्यवहार में

Answer:

(*i*) (घ) देवसमूह
(*ii*) (क) मदद के लिए
(*iii*) (ग) एक-दूसरे से छल-कपट करना
(*iv*) (ख) सहयोग की भावना से
(*v*) (ग) जीवन की सार्थकता परोपकार में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 11.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(*i*) **'मनुष्य मात्र बंधु है' का आशय क्या है?**

(क) मनुष्य मात्र को अपना भाई समझना
(ख) मनुष्य मात्र को अलग-अलग समझना
(ग) मनुष्य मात्र के अलग-अलग कर्म होना
(घ) मनुष्य मात्र के द्वारा परिश्रम किया जाना

(*ii*) **प्रत्येक मनुष्य अपना बंधु कैसे है?**

(क) एक राष्ट्र में जन्म लेने से
(ख) एक प्रांत में जन्म लेने से
(ग) एक जैसा खाना खाने से
(घ) सभी परमेश्वर की संतान होने से

(*iii*) **मानव मात्र में बाहरी अंतर क्यों दिखाई देता है?**

(क) भिन्न जलवायु के कारण
(ख) मानव की कर्म भिन्नता के कारण
(ग) माता-पिता की भिन्न प्रकृति के कारण
(घ) भिन्न देशों में जन्म के कारण

(*iv*) **सबसे बड़ा अनर्थ क्या है?**

(क) भाई का भाई से लगाव
(ख) भाई का भाई से विलगाव
(ग) भाई की भाई के प्रति कुटिलता
(घ) भाई-भाई में सहानुभूति अभाव

(*v*) **पद्यांश में कवि का मुख्य संदेश क्या है?**

(क) ईश्वर के प्रति कृतज्ञता
(ख) आपसी भाईचारे का भाव
(ग) पर के प्रति अनर्थ का अभाव
(घ) पर के प्रति अपनत्व का भाव

Answer:

(*i*) (क) मनुष्य मात्र को अपना भाई समझना
(*ii*) (घ) सभी परमेश्वर की संतान होने से
(*iii*) (ख) मानव की कर्म भिन्नता के कारण
(*iv*) (ख) भाई का भाई से विलगाव
(*v*) (घ) पर के प्रति अपनत्व का भाव

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2012
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 12.

कवि ने दधीचि और रन्तिदेव के नामों का उल्लेख करके हमें किस बात की प्रेरणा दी है?

Answer:

कवि ने दधीचि और रंतिदेव के नामों का उल्लेख करके हमें 'त्याग' व 'परोपकार' की प्रेरणा दी है। हमें सभी के हित के लिए, समाज के कल्याण के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

Question 13.

कवि ने दधीचि और रंतिदेव के नामों का उल्लेख करके हमें किस बात की प्रेरणा दी है?

Answer:

कवि ने दधीचि और रंतिदेव के नामों का उल्लेख करके हमें 'त्याग' व 'परोपकार' की प्रेरणा दी है। हमें सभी के हित के लिए, समाज के कल्याण के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 14.

'मनुष्यता' कविता में किस व्यक्ति को उदार कहा गया है और उसका क्या प्रभाव बताया गया है?

Answer:

'मनुष्यता' कविता में उस व्यक्ति को उदार कहा गया है जो संपूर्ण विश्व के लिए समानता और अखंडता का भाव रखता है जो संपूर्ण विश्व को अपना समझता है। ऐसे व्यक्ति को संपूर्ण सृष्टि से सम्मान और यश की प्राप्ति होती है।

Question 15.

'मनुष्यता' कविता में व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने की सलाह दी गई है?

Answer:

इस कविता में व्यक्ति को त्याग, परोपकार, स्नेह, प्रेम और उदारता जैसे महान मूल्यों के साथ जीवन जीने की सलाह दी गई है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 16.

'मनुष्यता' कविता में कवि ने हमें परोपकार के लिए कैसे प्रेरित किया है?

Answer:

'मनुष्यता' कविता में परोपकार के लिए महावीर कर्ण, महार्षि दधीचि, राजा रंतिदेव तथा राजा शिवि का उदाहरण देकर 'त्याग' के लिए प्रेरित किया गया है। परोपकार के लिए इन महान लोगों ने जो 'त्याग' किया, वह सदा-सदा मानव-जाति के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

Question 17.

"मनुष्य-मात्र बंधु है' कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'मनुष्य-मात्र बंधु है' कथन का अर्थ है कि संसार के सभी लोग 'भाई-भाई' हैं अर्थात मनुष्य-मनुष्य के बीच में जाति-धर्म, क्षेत्र, भाषा या रंग के आधार पर कोई भेद नहीं होता है। यहाँ मनुष्य के मन में विश्वबंधुत्व की भावना को प्रबल बनाने का प्रयास किया गया है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 18.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर, पूछे गए प्रश्नों के उचित उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(i) सुमृत्यु का क्या भाव है–

(क) अच्छी मृत्यु
(ख) निश्चित मृत्यु
(ग) याद करने योग्य मृत्यु
(घ) निरर्थक मृत्यु

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*ii*) **मर्त्य वह है–**

(क) जिसकी मृत्यु संभव है।
(ख) जिसकी मृत्यु निश्चित है।
(ग) जो मृत्यु से डरता है।
(घ) जो अच्छी मृत्यु मरता है।

(*iii*) **'मरा नहीं वही' किसके लिए कहा गया है?**

(क) जो स्वयं के लिए जीवित रहता है।
(ख) जो दूसरों के हित के लिए जीवित रहता है।
(ग) जो दूसरों को कष्ट देने के लिए जीवित रहता है।
(घ) जो कभी मरता ही नहीं।

(*iv*) **पशु-प्रवृत्ति क्या है?**

(क) पशुओं जैसा स्वभाव
(ख) पशुओं के समान जीवन
(ग) पशुओं जैसा बल
(घ) पशुओं का-सा आहार

(*v*) **मरना जीना निरर्थक है उसके लिए–**

(क) जिसको लोग याद न करें।
(ख) जिसकी समाज में निंदा हो।
(ग) जिसको शारीरिक कष्ट बना रहे।
(घ) जिसका पशु जैसा आचरण हो।

Answer:

(*i*) (ग) याद करने योग्य मृत्यु
(*ii*) (क) जिसकी मृत्यु संभव है।
(*iii*) (ख) जो दूसरों के हित के लिए जीवित रहता है।
(*iv*) (ख) पशुओं के समान जीवन
(*v*) (घ) जिसका पशु जैसा आचरण हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 19.

निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तरों वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(i) सबसे बड़ा विवेक क्या है?

(क) शास्त्रों का ज्ञान होना
(ख) संसार के रहस्य का ज्ञान होना
(ग) मनुष्य-मात्र को भाई समझना
(घ) ईश्वर का अस्तित्व मानना

(ii) स्वयंभू पिता का तात्पर्य है?

(क) परमपिता परमेश्वर
(ख) पालन-पोषण करने वाला
(ग) परिवार का मुखिया
(घ) स्वयं को पिता मानने वाला

(iii) मनुष्य-मनुष्य में बाहरी अंतर क्यों दिखाई देता है?

(क) रूप-रंग में अंतर के कारण
(ख) विचारों के अलग होने के कारण
(ग) विभिन्न जाति में जन्म लेने के कारण
(घ) कर्म के अनुसार फल भोगने के कारण

(iv) सबसे बड़ा अनर्थ है–

(क) भाई ही भाई को सम्मान न दे
(ख) भाई ही भाई का कष्ट दूर करे
(ग) भाई ही भाई का दुख दूर न करे
(घ) भाई ही भाई को अपना सहायक माने

(v) 'बंधु' शब्द का पर्यायवाची है–

(क) सहायक
(ख) भ्राता
(ग) भाईचारा
(घ) मित्र

Answer:

(i) (ग) मनुष्य-मात्र को भाई समझना
(ii) (क) परमपिता परमेश्वर
(iii) (घ) कर्म के अनुसार फल भोगने के कारण
(iv) (ग) भाई ही भाई का दुख दूर न करे
(v) (ख) भ्राता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 20.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से ढूँढ़कर उत्तर लिखिए–

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(*i*) **काव्यांश में 'मदांध' शब्द का अर्थ है–**
(क) धन के नशे में होना
(ख) मद में चूर होना
(ग) मदमस्त होना
(घ) घमंड में अंधा होना

(*ii*) **गर्व नहीं करना चाहिए कि–**
(क) हम धनी हैं।
(ख) हम सनाथ हैं।
(ग) हमारे सगे-संबंधी हमारे साथ हैं।
(घ) हम उन्नति करने में सक्षम हैं।

(*iii*) **यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि**
(क) समाज सबका ध्यान रखता है।
(ख) भारतीय परिश्रम के भरोसे रहते हैं।
(ग) ईश्वर सबके साथ है।
(घ) परिवार सबको सहारा देता है।

(*iv*) **अति 'भाग्यहीन' किसे कहा जाता है?**
(क) जो उच्चता का भाव रखता है।
(ख) जो धैर्य नहीं रखता।
(ग) जो डरता रहता है।
(घ) जो मदांध है।

(*v*) **कवि के अनुसार मनुष्य कौन है?**
(क) जो अपना हित करे
(ख) जो सच बोले
(ग) जो सबका कल्याण करे
(घ) देश के लिए श्रम करे

Answer:

(*i*) (क) धन के नशे में होना
(*ii*) (ख) हम सनाथ हैं
(*iii*) (ग) ईश्वर सबके साथ है।
(*iv*) (ख) जो धैर्य नहीं रखता
(*v*) (ग) जो सबका कल्याण करे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 21.

'मनुष्यता' कविता में कवि ने किसे उदार माना है? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'मनुष्यता' कविता में उस व्यक्ति को उदार कहा गया है जो संपूर्ण विश्व के लिए समानता और अखंडता का भाव रखता है, जो संपूर्ण विश्व को अपना समझता है। ऐसे व्यक्ति को संपूर्ण सृष्टि से सम्मान और यश की प्राप्ति होती है।

Question 22.

कवि मैथिलीशरण गुप्त के कथन "मनुष्यमात्र बंधु है" पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

Answer:

'मनुष्यमात्र बंधु है' कथन का अर्थ है कि संसार के सभी लोग 'भाई-भाई' हैं अर्थात मनुष्य-मनुष्य के बीच में जाति-धर्म, क्षेत्र, भाषा या रंग के आधार पर कोई भेद नहीं होता है। यहाँ मनुष्य के मन में विश्वबंधुत्व की भावना को प्रबल बनाने का प्रयास किया गया है।

Question 23.

'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए कि कवि ने सबसे बड़ा विवेक किसे कहा है और क्यों?

Answer:

'मनुष्यता' कविता के आधार कवि ने कहा है कि हर प्रत्येक मनुष्य आपस में एक दूसरे के बंधु है। इस बात को स्वीकार करना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। वस्तुतः हम सभी उसी परमपिता परमेश्वर की संतान हैं जो सबके लिए एक है। अपने कर्मफल के अनुसार हम भले ही अलग-अलग दिखते हैं, परंतु हम सबकी अंतर्रात्मा एक जैसी है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 24.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

चलो अभीष्ट मार्ग से सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(i) अभीष्ट मार्ग क्या है?

(क) जीवन जीने का मार्ग
(ख) कार्यालय आने-जाने का मार्ग
(ग) गाँव को शहर से जोड़ने वाला मार्ग
(घ) सहर्ष खेलने का मार्ग

(ii) विघ्न-बाधाएँ आने पर क्या करना चाहिए?

(क) काम शुरू नहीं करना चाहिए
(ख) उन्हें दूर करना चाहिए
(ग) काम रोक देना चाहिए
(घ) उलझना नहीं चाहिए

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*iii*) **'भिन्नता न बढ़े' का आशय है :**

(क) मतभेद कम हों

(ख) मतभेदों में भिन्नता हो

(ग) मत-भिन्नता हो

(घ) भेदभाव भिन्न हों

(*iv*) **समर्थ भाव क्या है?**

(क) दूसरों को सफलता दिलाकर अपनी शक्ति का परिचय।

(ख) दूसरों की सफलता का प्रयास।

(ग) दूसरों को सफल करते हुए अपनी चिंता न करें।

(घ) दूसरों को सफल करते हुए स्वयं सफल हों।

(*v*) **सच्चा मानव कौन है?**

(क) जो अपनी भलाई करे।

(ख) जो दूसरों की भलाई में अपना हित समझे।

(ग) जो दूसरों के लिए प्राण भी दे सके।

(घ) जो दूसरों की भलाई तन-मन-धन से करे।

Answer:

(*i*) (क) जीवन जीने का मार्ग

(*ii*) (ख) उन्हें दूर करना चाहिए

(*iii*) (क) मतभेद कम हों

(*iv*) (घ) दूसरों को सफल करते हुए स्वयं सफल हों।

(*v*) (ग) जो दूसरों के लिए प्राण भी दे सके।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 25.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(i) **कवि ने उदार किसे माना है?**

(क) जो बिना किसी स्वार्थ के परोपकार करता है।
(ख) जो दोनों हाथों से दान करता है।
(ग) जो सारे विश्व में अपनापन भर देता है।
(घ) जो किसी पर क्रोध नहीं करता है।

(ii) **उदार व्यक्ति के प्रति पृथ्वी का क्या भाव रहता है?**

(क) घृणा और निंदा का
(ख) कृतघ्नता और निंदा का
(ग) कृतज्ञता और आभार का
(घ) सहनशीलता और क्षमा का

(iii) **'सजीव कीर्ति कूजती' का आशय है–**

(क) यश फैलता है।
(ख) सम्मान होता है।
(ग) कीर्ति चहचहाती है।
(घ) कीर्ति सजीव हो जाती है।

(iv) **'सरस्वती बखानती' से तात्पर्य है–**

(क) उदार व्यक्ति पूजा जाता है।
(ख) वह यश और प्रसिद्धि पाता है।
(ग) सरस्वती की पूजा करता है।
(घ) उसकी कहानी बन जाती है।

(v) **सच्चा मनुष्य किसे कहा गया है?**

(क) जो मरने-मारने को उतारू हो जाता है।
(ख) जो मनुष्य होकर भी मरने से नहीं डरता।
(ग) जो मनुष्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग करता है।
(घ) जो मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(*i*) (क) जो बिना किसी स्वार्थ के परोपकार करता है।

(*ii*) (ग) कृतज्ञता और आभार का।

(*iii*) (क) यश फैलता है।

(*iv*) (ख) वह यश और प्रसिद्धि पाता है।

(*v*) (ग) जो मनुष्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग करता है।

2010
काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 26.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(क) कवि किसे वास्तव में मनुष्य मानता है?

(ख) महाविभूति किसे कहा गया है और क्यों?

(ग) उदार किसे कहा जाएगा?

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए–

विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

Answer:

(क) कवि उसे मनुष्य मानता है, जो अपना जीवन स्वयं के लिए न जीकर दूसरों के लिए जीता है तथा मानवता की भलाई के लिए अपना सबकुछ न्योछावार करने की भावना से ओतप्रोत होता है।

(ख) संसार के सभी प्राणियों के प्रति मन में बसी सच्ची सहानुभूति को कवि ने महाविभूति अर्थात सबसे बड़ी पूँजी कहा है क्योंकि यह पूँजी मनुष्य को अनेक विकारों से बचाकर परोपकार के पवित्र पथ पर आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है और इससे प्राप्त पुण्य जन्मों-जन्मों तक प्राप्त होता है तथा इससे जीवन सार्थक हो जाता है।

(ग) उदार उस व्यक्ति को कहा जाएगा जो परमार्थ के लिए अपने संसाधन तक लुटाता है और विनीत रहता है।

(घ) इस पंक्ति का भाव यह है कि महात्मा बुद्ध के युग में बलि-प्रथा का प्रचलन था। लोगों ने इसे धार्मिक कर्मकांड के रूप में स्वीकार कर लिया था, परंतु महात्मा बुद्ध ने इसका विरोध किया और प्राणीमात्र के प्रति अपार दया और करुणा के कारण अपने विरोधियों को भी क्षमा कर दिया। महात्मा बुद्ध की इसी उदारता, दया, करुणा आदि के सम्मुख सभी नतमस्तक हो गए और उनके अनुयायी बने।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 27.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें, उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

(क) 'अभीष्ट मार्ग' से क्या तात्पर्य है? उस पर चलते हुए हमें क्या करना चाहिए?

(ख) 'बढ़े न भिन्नता कभी,– से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(ग) मनुष्य किसे कहा गया है और क्यों?

Answer:

(क) 'अभीष्ट मार्ग' से तात्पर्य इच्छित मार्ग से है अर्थात जिस मार्ग पर हम चलना चाहते हैं। उस पर चलते हुए हमें कष्टों और रुकावटों को हटाना है न कि उनसे डर कर रुक जाना है।

(ख) कवि का संदेश यह है कि आपस में भेदभाव न बढ़े। भेदभाव से वैमनस्यता बढ़ती है, जिससे समाज उन्नति नहीं करता वरन अवनति के गर्त में गिरता है।

(ग) मनुष्य वही है जो परमार्थ करता हुआ अपना जीवन तक न्योछावर कर देता है। मनुष्य का निर्माण ही परोपकार के लिए हुआ है। अतः वही मानव सच्चे अर्थों में मनुष्य कहलाएगा जो मानवता के लिए जिए और मरे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in